International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-09-2025, Accepted: 08-10-2025, Published: 23-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 32-36

स्वामी विवेकानंद और भारत का पुनर्निर्माणः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. हरीश चंद
संकाय सदस्य, राजनीति विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
स्वामी विवेकानंद उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के ऐसे महान युगपुरुष थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और राजनीति को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित करते हुए आत्मनिर्भरता, शिक्षा, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक न्याय को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार बनाया। यह शोध–पत्र विवेकानंद के विचारों और उनके भारतीय समाज पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विवेकानंद का दर्शन न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरणा देता है, बल्कि आज के वैश्वीकरण और नवउदारवादी दौर में भी सामाजिक–आर्थिक न्याय तथा सांस्कृतिक पहचान की दृष्टि से प्रासंगिक है। स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के उन महान व्यक्तित्वों में से हैं जिन्होंने भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने आत्मनिर्भरता, शिक्षा, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता पर बल दिया। यह शोध पत्र भारत के पुनर्निर्माण में विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। अध्ययन में विशेष रूप से उनके राष्ट्रवाद, युवा जागरण, धार्मिक सहिष्णुता तथा शिक्षा–नीति संबंधी योगदानों का मूल्यांकन किया गया है। आज के वैश्विक युग में भी विवेकानंद का दृष्टिकोण भारत की विकास यात्रा और सांस्कृतिक अस्मिता को सशक्त बनाने में प्रेरक सिद्ध होता है।

मूल शब्दः पुनर्निर्माण, राष्ट्र, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, भारतीय समाज, पुर्नजागरण, शिक्षा, युवा, व्यवसाय,योजना, आत्मनिर्भरता

प्रस्तावना

भारत का पुनर्निर्माण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और आध्यात्मिक आयामों का समावेश होता है। स्वामी विवेकानंद ने इस बहुआयामी दृष्टिकोण को भारतीय समाज के सामने प्रस्तुत किया। वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब उसकी जनता आत्मबल, शिक्षा और नैतिक मूल्यों से समृद्ध हो। भारत का पुनर्निर्माण मात्र राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक अस्मिता, शैक्षिक उन्नति और आध्यात्मिक उत्थान का सामूहिक समन्वय निहित है। यदि केवल सत्ता परिवर्तन को ही स्वतंत्रता और पुनर्निर्माण मान लिया जाए, तो यह अधूरा दृष्टिकोण होगा। वास्तविक पुनर्निर्माण का अर्थ है – ऐसी राष्ट्रीय संरचना का निर्माण जिसमें व्यक्ति और समाज दोनों आत्मनिर्भर, आत्मगौरव से परिपूर्ण और आधुनिक प्रगति की राह पर अग्रसर हों। स्वामी विवेकानंद इस दृष्टिकोण के प्रखर प्रवक्ता थे। उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज की दशा–दिशा का गहन अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि भारत का उत्थान केवल राजनीतिक उपायों से संभव नहीं, बल्कि इसके लिए मानसिक क्रांति और सामाजिक–आध्यात्मिक पुनर्जागरण आवश्यक है। उनके विचारों में आध्यात्मिकता और व्यवहारिकता का अद्वितीय समन्वय मिलता है। वे मानते थे कि यदि भारत को विश्व मंच पर पुनः प्रतिष्ठा दिलानी है, तो इसके लिए सबसे पहले जनता में आत्मबल, नैतिकता और शिक्षा का प्रसार करना होगा। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा था कि "राष्ट्र का भविष्य तुम्हारे हाथों में है"। इसका आशय यह था कि भारत का वास्तविक पुनर्निर्माण तभी संभव होगा जब उसकी युवा शक्ति शिक्षा, अनुशासन और चरित्रबल से सम्पन्न होगी। विवेकानंद ने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान न मानकर उसे व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया। इस प्रकार, प्रस्तावना स्पष्ट करती है कि भारत के पुनर्निर्माण का मार्ग विवेकानंद के विचारों में निहित है, जहाँ स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक आज़ादी नहीं, बल्कि समाज की आंतरिक चेतना का जागरण है।

विश्व सभ्यता को भारत का अवदान है। संसार हमारे देश का अत्यंत ऋणी है। क्योंकि भारत के समान दुनिया के अन्य किसी राष्ट्र ने मानवीय हृदय को उन्नत सुसंस्कृत बनाने में भारत के समान चेष्टा नहीं की है। विवेकानंद आधुनिक भारत के उन विचारको में से हैं जिन्होंने भारतीय जनमानस, समाज, संस्कृति और आध्यात्मिकता को गतिमान किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विवेकानंद द्वारा राष्ट्र के पुनर्निर्माण में राष्ट्र के अंदर विद्यमान धर्म आध्यात्मिकता, इतिहास तथा संस्कृति,आम जनता की उन्नति, शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के द्वारा विकास, भारतीय जीवन पद्धति, जियो और जीने दो का सिद्धांत, श्रमिको का बुद्धिजीवी वर्गों में समता का विचार, वेदांती बुद्धि, विज्ञान तथा धर्म का गठजोड़, व्यावसायिक शिक्षा आदि विश्लेषण के आधार बिंदु है। 11 सितंबर 1893 को शिकागो अमेरिका में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में विवेकानंद द्वारा दिए गए उद्बोधन से भारतीय मेधा का प्रकटीकरण एवं स्वीकरण विश्व के सामने हुआ। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास, ज्ञान– विज्ञान,धर्म, आध्यात्मिकता को विश्व में जाना गया। विवेकानंद ने न केवल केवल भारत के अंदर पुर्नजागरण का बीजारोपण किया, अपितु वैश्विक क्षितिज पर भारतीय संस्कृति की कीर्ति को स्थापित किया।

प्रस्तुत शोध पत्र विवेकानंद के आदर्श जीवन, विचारों का तथ्यात्मक विश्लेषण करता है तथा यह आत्मसात करने का प्रयत्न करता है, कि भारत के पुनर्निर्माण में विवेकानंद के विचार उनकी कार्य योजना, राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण, भावना तथा वैज्ञानिक युक्तता, वेदांतिक सोच और संकल्पना आज कितनी कारगर है। प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध से तथ्यात्मक निष्कर्ष निकलता है कि भारत की तत्कालीन पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्र के विकास में शिक्षा और पुनर्निर्माण की राणनीतिक योजना जिसमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी अथवा व्यवसायिक शिक्षा, युवाओं की भूमिका, नारी की शिक्षा, चरित्र निर्माण शामिल है। साथी विवेकानंद की धर्म और आध्यात्मिकता की पुर्नसंकल्पना, सामाजिक उत्थान, सेवा और त्याग का विचार, भारतीय मेधा का विश्व पर प्रभाव, राजनीतिक जागरूकता राष्ट्र प्रेम, संगठन का

महत्व आदि निष्कर्षात्मक तथ्य भारत अथवा विश्व के किसी भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण में प्रासंगिक है। अतः कहा जा सकता है कि इस युग का केंद्र होगा –भारत ।

शोध की समस्या (Research Problem)

प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत के पुनर्निर्माण में भारत की सांस्कृतिक विरासत, धर्म अध्यात्म, शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति में विवेकानंद के विचारों की भूमिका का विश्लेषण करना। शोध पत्र में यह परीक्षण करना कि विवेकानंद के विचार आधुनिक भारत के पुनर्निर्माण के लिए कितने प्रासंगिक हैं। भारत के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा आध्यात्मिक आयामों का विशेष महत्व है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का केंद्रीय प्रश्न यह है कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, धर्म और अध्यात्म, शिक्षा तथा सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के पुनर्गठन में विवेकानंद के विचारों की क्या भूमिका रही है और वे आज के भारत में कितने उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत यह परीक्षण किया जाएगा कि विवेकानंद का दर्शन आधुनिक भारत के पुनर्निर्माण हेतु किस सीमा तक मार्गदर्शक एवं प्रेरक सिद्ध हो सकता है।

शोध पत्र के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. विवेकानंद के आदर्श, जीवन चरित्र और राष्ट्र के पुनर्निर्माण विचारों का अध्ययन करना।
2. विवेकानंद के मत में भारत की सांस्कृतिक विरासत, इतिहास, परंपराओं के संबंध में अध्ययन।
3. भारत की महानता और पतन, सामाजिक एवं राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
4. भारत के पुनर्निर्माण में उनके व्यक्तित्व, कृतित्व का युवाओं पर प्रभावी का परीक्षण करना।
5. समसामयिक रूप से भारत के लिए विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता को विश्लेषित करना।
6. क्या इस युग का केंद्र होगा – भारत। का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शोध पत्र लेखन की पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र "स्वामी विवेकानंद और भारत का पुनर्निर्माण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। शोध कृत द्वारा शोध पत्र के लिए शोध निर्देशिका के अनुरूप विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत को लिया गया है जिसमें भाषण, पत्र और लेखन, डायरी तथा शोध पत्र के शीर्षक के संबंध में 18 से 30 उम्र के युवाओं के साथ शोध पत्र प्रस्तुत करने से पूर्व वैचारिक विमर्श। ग्रंथालयों में उपलब्ध विवेकानंद से संबंधित शोध ग्रंथ, संस्मरण पत्र – पत्रिकाओं से अन्वेषण किया गया है। शोध पत्र के द्वितीयक स्रोत में विवेकानंद साहित्य, रामकृष्ण मिशन साहित्य, विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथ, शोध–पत्र, युग प्रवर्तक पत्रिका समाज समाज विज्ञान विश्व, केसरी पत्रिका एवं विवेकानंद द्वारा स्थापित मासिक पत्रिका प्रबुद्ध भारत। अद्वैत आश्रम की वेबसाइट आदि का शोध पत्र की उत्कृष्टता हेतु प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र "स्वामी विवेकानंद और भारत का पुनर्निर्माण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। इस शोध में विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की दिशा शोध निर्देशिका एवं अकादमिक मानकों के अनुरूप निर्धारित की गई है।

1. **प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)**– शोध–पत्र की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने हेतु प्राथमिक स्रोतों का गहन अध्ययन किया गया है, जिनमें स्वामी विवेकानंद के भाषण, पत्र, लेखन और डायरी।विवेकानंद के समकालीन लेखन और संस्मरण।शोध–पत्र प्रस्तुत करने से पूर्व 18 से 30 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं के साथ वैचारिक विमर्श। विवेकानंद पर उपलब्ध मूलभूत ग्रंथ और शोध सामग्री।

2. **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)** – शोध–पत्र की विश्लेषणात्मक गहराई बढ़ाने हेतु द्वितीयक स्रोतों का भी प्रयोग किया गया है, जिनमें दृविवेकानंद साहित्य एवं रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित साहित्य। विद्वानों द्वारा लिखित समकालीन ग्रंथ और शोध–पत्र। प्रासंगिक पत्र–पत्रिकाएँ जैसे दृ युग प्रवर्तक पत्रिका समाज, समाज विज्ञान विश्व, केसरी पत्रिका। विवेकानंद द्वारा स्थापित मासिक पत्रिका प्रबुद्ध भारत। अद्वैत आश्रम की वेबसाइट एवं अन्य प्रामाणिक ऑनलाइन स्रोत।

यदि पूरे विश्व में कोई ऐसा देश है, जिसे हम पुण्य भूमि कह सकते हैं, जहां मानव जाति की क्षमा, दया, धैर्य, शुद्धता आदि वृत्तियों का सर्वाधिक विकास हुआ है, जहां पर आध्यात्मिकता तथा सर्वाधिक आत्मन्वेषण का विकास हुआ है तो वह भूमि वह श्रेष्ठ भूमि भारत ही है। भारत ने कभी भी साम्राज्यवादी गौरव को महत्व नहीं दिया है। भारत का नवीन इतिहास उन विभूतियों से परिपूर्ण है जिन्होंने न केवल अपने समय को दिशा दी, अपितु आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन भी किया। भारतीय मेधा को विश्व पटल पर सर्वप्रथम स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद (1863–1902) है। उन्नीसवीं सदी का भारत राजनीतिक गुलामी, सामाजिक रूढ़ीवादिता और आर्थिक निर्धनता से बोझिल था। तब से लेकर अब तक दो विश्व युद्ध, भारत की स्वाधीनता, शीत युद्ध, भारत – चीन एवं भारत – पाकिस्तान युद्ध, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, मानव के दृष्टिकोण एवं जीवन शैली में बदलाव आदि हो चुके हैं। न सिर्फ भारत अपितु सारे विश्व में राष्ट्रों के पुनर्निर्माण हेतु अनेक समस्याएं एवं चुनौतियां हैं। कुछ ज्ञात है, कुछ अज्ञात है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि क्या वाकई में विवेकानंद के विचार आज भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण में प्रासंगिक है।

प्रस्तुत शोध पत्र का ध्येय ही श्भारत का पुनर्निर्माणश है। विवेकानंद ने भारतीय जनों को जो राष्ट्रीयता ,आत्मगौरव और आत्मविश्वास का संदेश दिया वह है– मनुष्य निर्माण, शिक्षा, आम जनता की उन्नति, युवा शक्ति, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के द्वारा विकास, महिला उत्थान, आध्यात्मिकता और मानव सेवा द्वारा उध्दार, जियो और जीने दो, वेदांती बुद्धि, श्रमिक और बुद्धिजीवी वर्गों में समता, विज्ञान तथा धर्म का गठजोड़ को भारत के पुनर्निर्माण का का आधार बताते हुए अपनी कार्य योजना प्रस्तुत की।भारत की संस्कृति, आदर्श तथा इतिहास ही भारत को अमर भारत बनाते हैं। विवेकानंद का योगदान केवल धार्मिक पुनर्जागरण तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका व्यक्तित्व सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक था। उनके विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी प्रेरणा दी और नवीन भारत की आत्मा को स्वरूप प्रदान किया। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य विवेकानंद के विचारों का विश्लेषण करना और यह परीक्षण करना है कि उनके विचार वर्तमान में भारत के पुनर्निर्माण में किस प्रकार प्रासंगिक है। विवेकानंद का जन्म पौष संक्रांति 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ। विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। वे एक ऐसे परिवार में जन्मे जहाँ पाश्चात्य शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा दोनों का प्रभाव था। बचपन से ही वे मेधावी, तर्कशील और जिज्ञासु स्वभाव के थे। उनकी मां धार्मिक स्वाभाव की थी, जिसकी अमित छाप उनके जीवन पर सदैव रही। विवेकानंद घुड़सवारी, तैराकी, फुटबॉल, क्रिकेट, कुश्ती

बॉक्सिंग में पारंगत थे, उनका कंठ भी सुरीला था। रामकृष्ण परमहंस से उनकी प्रथम भेंट उनके भजन गायन के समय ही हुई थी। इस भेंट ने उनके जीवन की दशा और दिशा ही बदल दी। रामकृष्ण ने नरेंद्र को आत्मानुभूति और ईश्वर–प्राप्ति का मार्ग दिखाया। यही से वे नरेंद्र से विवेकानंद बने। अब विवेकानंद वह साधक थे जो विवेक द्वारा संसार और सत्य में भेद करता। गुरु द्वारा अपने शिष्य के अंदर जो संचार किया गया वही उनके विचारों द्वारा पूरे विश्व में परिलक्षित हुआ। विवेकानंद सन्यास तक सीमित नहीं रहे। बल्कि उन्होंने भारत का व्यापक भ्रमण किया। भारत की गरीबी, अज्ञान और सामाजिक विषमता को देखा और स्वयं महसूस किया कि हां राष्ट्र के पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।

1. **तत्कालीन भारत की पृष्ठभूमि–** तत्कालीन भारत में अनेकों अनेक विषमताएं और समस्याएं थी । जिसमें प्रमुख थी भारत की परतंत्रता, अंग्रेज़ी औपनिवेशिक शासन का राजनीतिक दमन,जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक शिक्षा पर एकाधिकार और शिक्षा की कमी, जनता पर अत्याचार, महिलाओं की अवहेलना, धर्म के नाम पर जनता का शोषण,गरीबी, आत्मगौरव की भावना का अभाव, आलस्य, मानसिक संकीर्णता तथा संगठन का अभाव। राष्ट्रीय पतन की इन परिस्थितियों ने भारतीय समाज को संवेदनहीन, निराश और निष्क्रिय बना दिया था। विवेकानंद ने भारतवासियों को उनके गौरवशाली अतीत की याद दिलाई और आत्मविश्वास जागते हुए कहा कि प्राचीन काल में भारत ने ही सर्वप्रथम चिकित्सा वैज्ञानिक उत्पन्न किए थे, दर्शन शास्त्र के क्षेत्र में तो जैसा की महान जर्मन दार्शनिक शॉपेनहॉवर ने स्वीकार किया कि हम अभी दूसरे राष्ट्रों से बहुत ऊंचे हैं, संगीत के सात प्रधान स्वर भारत ने ही दिए, भाषा विज्ञान में हमारी संस्कृत भाषा सारी यूरोपीय भाषाओं के आधार के रूप में स्वीकार की जाती है, साहित्य में हमारे महाकाव्य सर्वोच्च है, भारत में ही सर्वप्रथम रुई और बैगनी रंग बनाया, शतरंज,ताश और चौपड़ खेल का आविष्कार भी भारत ने ही किया

2. **राष्ट्र के विकास में शिक्षा और पुनर्निर्माण की रणनीतिक योजना –** शिक्षा द्वारा चरित्र का निर्माण आवश्यक है। श्रमजीवियों की काफी काल से उपेक्षा हुई और उन्हें शिक्षित होने का अवसर नहीं मिला है। उन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि वह यथाशीघ्र अपनी प्रारंभिक कठिनाइयों पर विजय पा सकें। वह लोग शिक्षा पाने के लिए आएं इसकी जगह विवेकानंद चाहते थे की शिक्षा को ही उनके पास पहुंचाया जाए। विवेकानंद ने कहते हैं, "शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति में निहित पूर्णता का विकास।" विवेकानंद का मानना था कि पुस्तक–आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि चरित्र–निर्माण, आत्मविश्वास और व्यावहारिकता पर आधारित शिक्षा आवश्यक है। विवेकानंद कहते हैं – शिक्षा! अच्छी शिक्षा मिलने पर अभी तक जो लोग पिछड़े हुए हैं, वह स्वयं ही उन्नत हो जाएंगे।

3. **चरित्र निर्माण –** शिक्षा का अर्थ केवल जानकारियां देना ही नहीं, बल्कि कुछ और भी सार्थक वस्तु था। शिक्षा का अर्थ है विचारों को आत्मसात करना; शिक्षा मनुष्य का निर्माण करने वाली, जीवन प्रदान करने वाली तथा चरित्र का निर्माण करने वाली होनी चाहिए। अत: शिक्षा का लक्ष्य केवल विद्या अर्जन नहीं बल्कि शक्तिशाली और नैतिक चरित्र का निर्माण होना चाहिए।नारी शिक्षा – विवेकानंद कहते हैं कि जो ईश्वर सामग्र जगत में महाशक्ति के रूप में जानता है और स्त्रियों में शक्ति का प्रकाश मानता है, वही शाक्त है। विवेकानंद ने स्त्रियों को "माँ शक्ति" के रूप में देखा और उनके उत्थान को राष्ट्र के विकास की शर्त माना। जिसके लिए शिक्षा आवश्यक है।

4. **राष्ट्र के पुनर्निर्माण में युवाओं की भूमिका –** विवेकानंद कहते हैं, मेरा विश्वास युवा पीढ़ी – नई पीढ़ी में है; मेरी कार्यकर्ता उन्हें में से आएंगे और वे सिंहों की भांति सभी समस्याओं का हल निकालेंगे। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र का भविष्य कहा और उनमें उत्साह, आत्मबल, संगठन और परिश्रम, त्याग और सेवा के आदर्श को भारत के युवाओं के लिए आवश्यक कहा है।

5. **विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी अथवा व्यावसायिक शिक्षा –** विवेकानंद का ह्रदय भारत की निर्धनता से व्यथित था इसे कैसे दूर किया जाए इसके लिए विवेकानंद ने तकनीकी और औद्योगिक शिक्षा पर बल दिया ताकि भारत आत्मनिर्भर बने। विवेकानंद ने औद्योगिक क्रांति के लिए पाश्चात्य विज्ञान तथा तकनीक का व्यापक रूप से प्रयोग करने को कहा। परंतु अन्य किसी क्षेत्र में पश्चिम की नकल नहीं करने की बात भी उन्होंने कही।

6. **विवेकानंद की धर्म और आध्यात्मिकता की पुर्नसंकल्पना –** विवेकानंद कहते हैं कि हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदंड, आधार –भित्ति या जीवन – केंद्र एकमात्र धर्म ही है। विवेकानंद ने धर्म को केवल पूजा–पाठ तक सीमित नहीं किया, बल्कि उसे जीवन का आधार माना। उनके अनुसार हर व्यक्ति में अंतर्निहित दिव्यता है। संसार को सिखाने के लिए अब भी हमारे पास कुछ है। इसलिए सैकड़ो वर्षों के अत्याचार और करीब हजार वर्षों के विदेशी शासन तथा शोषण के बावजूद यह देश जीवित है। इस देश के अभी जीवित रहने का मुख्य प्रयोजन यह है कि इसने अब भी ईश्वर और धर्म तथा अध्यात्म रूप रत्नकोष का परित्याग नहीं किया है। विवेकानंद ने अद्वैत वेदांत को आधुनिक भाषा में प्रस्तुत कियाकृ"सब कुछ एक ही है।" एक ही ब्रह्म सब में है। विवेकानंद का मूल मंत्र धार्मिक सहिष्णुता था। 1893 में अमेरिका के शिकागो धर्म संसद में उन्होंने कहा कि सभी धर्म सत्य तक पहुँचने के मार्ग हैं। त्याग और सेवा को धर्म का सबसे बड़ा रूप मानाकृ" जीव सेवा ही शिव सेवा है।" नर सेवा ही नारायण सेवा है। अतः यह तथ्य प्रकट होता है कि,मूलतः विवेकानंद ने धर्म को सामाजिक उत्थान और मानवता की सेवा का साधन बनाया। विवेकानंद कहते हैं कि हम लोग सभी धर्मो के प्रति न केवल सहिष्णुता में विश्वास करते हैं, अपितु सभी धर्मो को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने पृथ्वी के सभी धर्मो और सभी देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। विवेकानंद कहते हैं–" सारे प्रतिरोध के बावजूद, शीघ्र ही प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा होगा– 'संघर्ष नहीं, सहयोग'; 'पर–भाव–विनाश नहीं, पर–भाव– ग्रहण'; 'मतभेद और कलह नहीं, समन्वय और शांति'।"

7. **राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्र प्रेम –** राजनीतिक जागरूकता के संदर्भ में विवेकानंद ने कहा है कि समाज का नेतृत्व चाहे विद्या – बल से प्राप्त हुआ हो, या बाहु – बल से अथवा धन – बल से; परंतु शक्ति का आधार प्रजा ही है। इस शक्ति के आधार – प्रजा से शासक – वर्ग जितना ही अलग रहेगा, वह उतना ही दुर्बल होगा। विवेकानंद कहते हैं की, गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूं प्रत्येक भारतवासी मेरा

भाई है। तथा भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है। यद्यपि विवेकानंद राजनीति से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े, किंतु उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को गहरा आधार दिया। विवेकानंद का कहना था कि हमारा सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप आम जनता की उपेक्षा है और वह भी हमारे पतन का एक कारण है। हम चाहे जितनी राजनीति करें, उससे तब तक कोई लाभ नहीं होगा, जब तक की भारत की जनता एक बार फिर सुशिक्षित, सुपोषित तथा सुपोषित तथा सुपालित नहीं होगी। विवेकानंद ने आत्मगौरव और आत्मनिर्भरता की भावना जगाई, तथा यह कहा की, गुलाम राष्ट्र कभी महान और श्रेष्ठ नहीं हो सकता। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नायक बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी आदि नेतृत्वकर्ताओं ने विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा ग्रहण की।उनके विचारों ने राष्ट्रीय आंदोलन को सांस्कृतिक और नैतिक आधार प्रदान किया। तथा स्वतंत्र भारत के नेतृत्वकर्ताओं पर भी विवेकानंद के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखलाई पड़ता है। जैसे की योग को आज विश्व क्षितिज पर स्थापित किया गया है, 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

8. **भारतीय मेधा का विश्व में प्रभाव और भारत का पुनर्निर्माण –** विदेशो के साथ आदान–प्रदान का विचार देते हुए विवेकानंद कहते हैं कि हमें पृथ्वी के सभी राष्ट्रों से मिलना – जुलना पड़ेगा। प्रत्येक भारतीय जो की विदेश भ्रमण करने जाता है उन सैकड़ो लोगों की अपेक्षा अपने देश को अधिक लाभ पहुंचता है जो केवल अंधविश्वासों तथा स्वार्थपरता की पोटली मात्र है। 1893 में अमेरिका के शिकागो विश्व धर्म महासभा में उनके भाषण ने भारतीय ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म या कहां जाए की सदियों से सोए हुए भारत को विश्व मंच पर नई पहचान दिलाई।पश्चिम ने भारत को केवल गरीबी और अंधविश्वास का देश मानना बंद किया और उसे दर्शन, योग और आध्यात्मिकता की भूमि के रूप में पहचाना और स्वीकार किया तथा विश्व के राष्ट्रों का नजरिया भारत के प्रति बदला।इससे भारतवासियों का आत्मविश्वास भी बढ़ा। भारतीय जैन विवेकानंद के इस कालजई उद्बोधन को लेकर आज तक गौरवान्वित अनुभूत करते है। विवेकानंद ने कहा कि, विदेशी नियंत्रण को हटाकर हमारे विविध शास्त्रों, विधाओं का अध्ययन हो और साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान भी सीखा जाए। हमें उद्योग धंधों की उन्नति के लिए यांत्रिक शिक्षा भी प्राप्त करनी होगी,जिससे देश की युवक नौकरी ढूंढने के बजाय अपने आजीविका के लिए समुचित धनोपाजर्न कर सकें। भारत केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि विज्ञान और आधुनिकता के क्षेत्र में भी योगदान दे सकता है।

9. **सामाजिक उन्नयन और सेवा का विचार –** विवेकानंद ने लिखा है कि जाति धर्म, भाषा तथा शासन प्रणाली यह सब एक साथ मिलकर एक राष्ट्र की सृष्टि करते हैं। यदि एक–एक जाति को लेकर हमारे राष्ट्र से तुलना की जाए, तो हम देखेंगे कि जिन उपादानों से संसार के दूसरे राष्ट्र गठित हुए हैं, वह संख्या में यहां के उपादानों से कम है। यहां आर्य हैं, द्रविड़ है, तातार है, तुर्क है, मुगल है, यूरोपीय है, मानो – संसार की सभी जातियां इस भूमि में अपना – अपना खून मिल रही है। भाषा का यहां एक विचित्र जमावड़ा है। विवेकानंद ने जातिवाद और छुआछूत का विरोध किया।उन्होंने कहा कि समाज का उत्थान तभी संभव है जब गरीब और वंचित वर्ग को अवसर मिले। वह कहते थे कि श्रमजीवियों को इतने अवसर मिले की वह बुद्धिजीवियों के स्तर तक पहुंच जाए। विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य त शिक्षा, स्वास्थ्य त्याग और सेवा कार्यों के माध्यम से समाज का सशक्तिकरण करना था

10. **समालोचनात्मक दृष्टि –** विवेकानंद के राष्ट्र के पुनर्निर्माण के विचारों के संबंध में कुछ आलोचकों का मानना है कि विवेकानंद का ज़ोर धार्मिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर अधिक था, जिससे राजनीतिक और आर्थिक रणनीति स्पष्ट रूप से सामने नहीं आई। विश्लेषण में से स्पष्ट होता है कि उनका दृष्टिकोण मूलभूत था। उन्होंने मनुष्य निर्माण ,मानव संसाधन के विकास, शिक्षा, आत्मविश्वास और नैतिकता को राष्ट्र–निर्माण की जड़ माना। तथा तथा आम जनता की उन्नति आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा जनता का उद्धार विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के द्वारा भारत का विकास श्रमिक का बुद्धिजीवी वर्गों में समता का विचार, विज्ञान तथा धर्म का गठजोड़ यह वही तत्व हैं जिन पर किसी भी सशक्त राष्ट्र की नींव रखी जाती है। जिससे कि किसी भी राष्ट्र का पुनर्निर्माण संभव है।

11. **आधुनिक भारत के लिए सार्थकता –** विवेकानंद ने लिखा है कि, एक नवीन भारत निकल पड़े– हल पड़कर, किसानो की कुटी भेदकर, मछुआरे, माली, मोची, महततरों की कुटीरों से। निकल पड़े बनियों की दुकानों से, भुजवा के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से। निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों पहाड़ों, पर्वतों से। इन लोगों ने हजारों वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किया है– उससे पाई है अपूर्व सहनशीलता। आगे भी लिखते हैं कि यह विश्व के सामने अब यही है, उत्तराधिकारी भावी भारत। वर्तमान में राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु विवेकानंद के विचार उतने ही प्रासंगिक हैंकृ भारत की नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में उनके विचारों की छाप है। जिसमें मनुष्य निर्माण,शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण, जियो और जीने दो, आम जनता की उन्नति, त्याग, सेवा, आत्मविश्वास, आत्म श्रद्धा, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के द्वारा विकास, विज्ञान तथा धर्म का गठजोड़, विदेशो के साथ आदान–प्रदान, आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा, अपनी परंपराओं में ही नए भारत का गठन,मेक इन इंडिया और स्टार्ट–अप इंडिया जैसी योजनाओं में उनकी आत्मनिर्भरता की भावना आज स्पष्ट रूप से दिखाई देती है जोकि शोध परक विश्लेषण में प्रकट हुआ है। भारत के युवाओं के संदर्भ में विवेकानंद द्वारा कठोउपनिषद की यह उक्ति — "उत्तिष्ठित जागृत प्राप्य वरान् निबोधत" अर्थात "उठो जागो, और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।" सिंह गर्जन के साथ आत्मा की महिमा घोषित करो।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय समाज को आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण किया। उन्होंने शिक्षा, युवा शक्ति, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक गौरव के माध्यम से भारत के पुनर्निर्माण का खाका प्रस्तुत किया। आज के भारत में उनके विचार केवल प्रेरणा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की वास्तविक दिशा भी प्रदान करते हैं। प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध पत्र में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं उसमें भारतीय युवाओं की प्रतिभा का जयघोष जैसा कि विवेकानंद के विचारों से परिलक्षित होता है। आज संपूर्ण संसार में व्याप्त है विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, राजनीतिक, सांस्कृतिक, अंतरिक्ष विज्ञान, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों ने एक आदर्श स्थापित किया है। विवेकानंद का संपूर्ण आदर्श जीवन और

विचार भारत के पुनर्निर्माण की आधारशिला हैं। उन्होंने भारतीय समाज को आत्मसम्मान, आत्मगौरव, आत्मबल और राष्ट्रीय एकता का भावनात्मक संदेश दिया। उनकी दृष्टि केवल आध्यात्मिक, धार्मिक या दार्शनिक नहीं, अपितु भारत में सामाजिक सुधार, शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा नारी कल्याण और सशक्तिकरण एवं मानवता पर केंद्रित थी। विवेकानंद के विचारों ने स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरणा दी। और आधुनिक भारत की आत्मा को जगाया। उन्होंने मनुष्य निर्माण पर बल दिया । आम जनता की उन्नति को अपना ध्येय माना। राष्ट्रीय अखंडता, धर्म व आध्यात्मिकता, सार्वभौमिक धर्म की पैरोकारी, शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता, प्रगतिशीलता, नैतिकता तथा संगठन को महत्वपूर्ण माना है। इन विश्लेषणात्मक तथ्यों के आधार पर भारत का पुनर्निर्माण के साथ ही दुनिया के नवोदित एवं पुरातन राष्ट्रों के पुनर्निर्माण लिए विवेकानंद के यह विचार प्रासंगिक है । तथ्यात्मक आधार पर यह कहा जा सकता है इस युग का केंद्र होगा– भारत।

संदर्भ सूची

1. विवेकानंद, स्वामी (1963). विवेकानंद साहित्य – संपूर्ण 10 खंड. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
2. गंभीरानंद, स्वामी (2015). युग नायक विवेकानंद. नागपुर: रामकृष्ण मठ।
3. बनहट्टी, जी. एस. (1995). स्वामी विवेकानंद का जीवन और दर्शन. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
4. रोलां, रोमां (2014). विवेकानंद. प्रयागराज: लोक भारतीय प्रकाशन।
5. विवेकानंद, स्वामी. जाती, संस्कृति और समाजवाद. नागपुर: रामकृष्ण मठ।
6. भुयान, पी. आर. (2003). स्वामी विवेकानंद: पुनरुत्थानशील भारत के मसीहा. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
7. भारद्वाज, रामदेव (2013). विवेकानंद सुकर्ण और इंडोनेशियाई राष्ट्र–निर्माण. नई दिल्ली: अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना।
8. निखिलानंद, स्वामी (1953). विवेकानंद: एक जीवनी. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
9. चंद, हरीश (2022). विवेकानंद और राष्ट्र निर्माण. नई दिल्ली: आर. पी. पब्लिकेशन।
10. शर्मा, अरविंद (2005). आधुनिक हिंदू विचार: एक परिचय. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. विवेकानंद, स्वामी (2014). भारत का भविष्य (अनुवाद: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'). नागपुर: रामकृष्ण मठ।
12. युग प्रवर्तक (2013). भोपाल: विवेकानंद स्वराज संस्थान संचनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन।
13. प्रेरणा पुंज स्वामी विवेकानंद (2013). (संपा. गोविंद प्रसाद शर्मा). भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
14. दुबे, अभय कुमार (संपा.) (2015). समाज–विज्ञान विश्वकोश, खंड 4. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
15. प्रबुद्ध भारत. (मासिक पत्रिका, स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित). कोलकाता: अद्वैत आश्रम।